अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय महत्व

महान अक्टूबर सर्वहारा क्रांति को सम्पन्न हुए लगभग एक सदी बीत चुकी है। इस क्रांति द्वारा स्थापित समाजवादी समाज भी ध्वस्त हो चुका है। फिर भी इस क्रांति का प्रभाव पिछली पूरी सदी के इतिहास पर साफ तौर पर देखा जा सकता है। 20वीं सदी से अगर अक्टूबर क्रांति को निकाल दें तो दुनिया जैसी आज है वैसी नहीं रह जायेगी। अक्टूबर क्रांति की धमक ही 20वीं सदी में दुनिया को वहां ले गयी जहां एक समय में एक तिहाई दुनिया पूंजीवादी-साम्राज्यवादी ताने बाने को तोड़ कर समाजवादी खेमे का निर्माण कर सकी। अक्टूबर क्रांति की प्रेरणा से ही उपनिवेशों-नव उपनिवेशों में साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों का तूफान खड़ा हो सका और ढेरों देश साम्राज्यवादियों की प्रत्यक्ष गुलामी से मुक्ति पाने की ओर बढ़ सके। अक्टूबर क्रांति के द्वारा निर्मित सोवियत समाज की भारी कुर्बानी और संघर्षशीलता के दम पर ही पिछली सदी में फासीवाद को शिकस्त दी जा सकी। अक्टूबर क्रांति के ही दबाव में दुनिया भर के पूंजीवादी शासकों को एक वक्त में अपने यहां कल्याणकारी राज्य कायम कर क्रांति को टालने का प्रयास करने को मजबूर होना पड़ा।

अक्टूबर क्रांति को जहां ढेरों इतिहासकार 20वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण घटना करार देते हैं। तो कुछ ने इसे 1789 की फ्रांसिसी क्रांति से कहीं ज्यादा वैश्विक प्रभाव छोड़ने वाली घटना करार दिया। कुछ ने इसके प्रसार की तुलना दुनिया में इस्लाम के प्रसार से की। अक्टूबर क्रांति के समर्थक हों चाहे विरोधी कोई भी इस क्रांति के ऐतिहासिक महत्व से इन्कार नहीं कर सकता।

अक्टूबर क्रांति ने केवल पिछली सदी के इतिहास को ढालने में ही अपनी भूमिका नहीं निभायी बल्कि इसने कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को भविष्य की क्रांतियों में काम आने वाले अस्त्रों-शस्त्रों से भी सुसज्जित किया। लेनिनवाद के रूप में मार्क्सवाद का ऊंचे स्तर पर विकास सम्भव हो सका। और आगे बढ़कर अक्टूबर क्रांति की सफलता ने ही नहीं बल्कि 1956 में समाजवादी समाज में पूंजीवादी पुनर्स्थापना ने भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को ढेरों महत्वपूर्ण सबक निकालने में मदद की। 1956 की पूंजीवादी पुनर्स्थापना का चीनी कम्युनिस्ट पार्टी व माओ द्वारा विश्लेषण किया गया। सोवियत समाज के निर्माण में की गयी गलतियों को चिह्नित किया गया व भविष्य में पूंजीवादी पुनर्स्थापना से बचने के रास्ते निकाले गये। इस सबसे मार्क्सवाद का सिद्धान्त विकसित होकर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा के उन्नत स्तर तक जा पहुंचा। इस तरह भले ही पिछली सदी में समाजवादी क्रांतियों की पहली शृंखला समाप्त हो गयी, उनके द्वारा निर्मित समाजों में पूंजीवादी पुनर्स्थापना हो गयी। पर इन क्रांतियों की शृंखला के अनुभव और सिद्धान्त भविष्य में समाजवादी क्रांतियों की नयी शृंखला के पैदा होने के महत्वपूर्ण प्रेरक बने रहेंगे। इन अर्थों में अक्टूबर क्रांति के अनुभवों-निष्कर्षों का महत्व दुनिया भर के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए आज भी बना हुआ है।

इस लेख में हम पहले अक्टूबर क्रांति के उस समय उत्पन्न हुए उसके अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को समझने का प्रयास करेंगे। इसके पश्चात इस क्रांति के उन सबकों की चर्चा करेंगे जो बाद की क्रांतियों के लिए भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए आवश्यक बन गये। इसके पश्चात हम पिछली सदी के इतिहास में अक्टूबर क्रांति के महत्व का एक लेखा जोखा लेते हुए भविष्य की क्रांतियों में इसके महत्व की चर्चा करेंगे।

A. अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र

"अक्टूबर क्रांति को महज "राष्ट्रीय सीमाओं के अंतर्गत" क्रांति के बतौर नहीं माना जा सकता। यह मुख्यतया एक अंतर्राष्ट्रीय, वैश्विक चरित्र की क्रांति है, क्योंकि यह मानवता के विश्व इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ को, पुराने, पूंजीवादी विश्व से नये समाजवादी विश्व में एक मोड़ को प्रदर्शित करती है।

"अतीत में क्रांतियों का आमतौर पर समापन सरकार के शीर्ष पर शोषकों के एक गुट को शोषकों के दूसरे गुट द्वारा हटाने से हो जाता था। शोषक बदल जाते थे, शोषण जारी रहता था। ऐसी स्थिति गुलामों के मुक्ति आंदोलन के दौरान थी। ऐसी स्थिति भूदासों के विद्रोहों के काल के दौरान थी। ऐसी स्थिति इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी की सुविदित 'महान' क्रांतियों के दौर में थी। मैं पेरिस कम्यून की बात नहीं कर रहा हूं। वह सर्वहारा वर्ग द्वारा पूंजीवाद के विरुद्ध इतिहास को मोड़ने का पहला गौरवशाली,बहादुराना लेकिन असफल प्रयास था।

"अक्टूबर क्रांति इस क्रांतियों से **सिद्धान्ततः** भिन्न थी। इसका लक्ष्य शोषण के एक रूप को शोषण के दूसरे रूप में, शोषकों के एक गुट द्वारा शोषकों के दूसरे गुट से बदलने का नहीं है बल्कि इसका लक्ष्य मनुष्य द्वारा मनुष्य के तमाम शोषण के खात्मे का, शोषकों के सभी गुटों के खात्मे का, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को स्थापित करने का, अब तक अस्तित्वमान सभी उत्पीड़ित वर्गों में सबसे क्रांतिकारी वर्ग की सत्ता को स्थापित करने का, एक नये, वर्गहीन, समाजवादी समाज को संगठित करने का है।

"ठीक यही कारण है कि अक्टूबर क्रांति की **विजय** मानवता के इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को, विश्व पूंजीवाद के ऐतिहासिक भवितव्य में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को, विश्व सर्वहारा के मुक्ति आंदोलन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन

को, संघर्ष के तरीकों और संगठन के रूपों में, जीवन व परम्पराओं के तरीकों में , समूचे विश्व के शोषित जनसमुदाय की संस्कृति और विचारधारा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को प्रदर्शित करती है।

"यही बुनियादी कारण है जो अक्टूबर क्रांति को अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक चरित्र की क्रांति बनाता है।"

[अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र (अक्टूबर क्रांति की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर) - स्तालिन, मार्क्सिस्ट इण्टरनेट आर्काइव, अनुवाद हमारा]

स्तालिन की उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति एक वैश्विक चरित्र की क्रांति थी क्योंकि इस क्रांति से पूंजीवादी दुनिया के पतन की शुरुआत हो गयी। और भविष्य में समाजवादी दुनिया पूंजीवादी दुनिया की जगह ले लेगी, इसकी उद्घोषणा इस क्रांति ने कर दी। यह क्रांति पूर्व की सभी क्रांतियों से इस रूप में भिन्न थी कि इसका लक्ष्य एक शोषणकारी समाज की जगह दूसरा शोषणकारी समाज कायम करना नहीं था बल्कि इसका लक्ष्य सभी शोषकों, शोषण के सभी रूपों का खात्मा कर मानवता को वर्गहीन समाज की ओर बढ़ाना था। यह क्रांति वैश्विक चरित्र की क्रांति थी क्योंकि इसने पूरी दुनिया में मजदूर वर्ग के संघर्षों को सही रास्ता व तौर तरीके सिखाये। यह वैश्विक चरित्र की क्रांति थी क्योंकि इसने क्रांतियों की शृंखला की शुरुआत की। यह वैश्विक चरित्र की क्रांति थी क्योंकि इसके शासन का रूप अर्थात सोवियतें बाकी सफल-असफल क्रांतियों में दोहराये जाने लगा।

अक्टूबर क्रांति का तत्कालीन दुनिया के जनसंघर्षों पर किस कदर व्यापक प्रभाव पड़ा था इसे इन बातों से समझा जा सकता है।

a.साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा क्रांतियों के युग का सूत्रपात

अक्टूबर क्रांति से विश्व साम्राज्यवाद के मोर्चे के टूटने की शुरुआत हो गई। दुनिया के छठे हिस्से को इस क्रांति ने साम्राज्यवाद के शोषण के जाल से मुक्त करा दिया। इस क्रांति का पूंजीवादी विकसित देशों के सर्वहारा आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ना लाजिमी था और वह पड़ा। इस क्रांति ने सभी देशों के मजदूर वर्ग को इस बात की राह दिखला दी कि जो कुछ सोवियत मजदूर कर रहे हैं वही सभी देशों के सर्वहाराओं का रास्ता है। इस तरह अक्टूबर क्रांति ने साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा क्रांतियों के युग का सूत्रपात कर दिया।

अक्टूबर क्रांति जब एक पिछड़े पूंजीवादी देश में सम्पन्न हो रही थी तो इस क्रांति की सफलता और इसके समाजवाद की ओर बढ़ने के बारे में न केवल दुनिया के क्रांतिकारी बल्कि बोल्शेविक पार्टी के बहुत से नेता भी आशंकित थे। उनकी प्रारंभिक उम्मीदें ही यह थीं कि अक्टूबर क्रांति समूचे यूरोप में क्रांतियों की शुरुआत कर देगी और इस रूप में विश्व क्रांति ही अक्टूबर क्रांति के व सोवियत समाजवाद के टिकने की अंतिम गारंटी होगी।

अक्टूबर क्रांति की धमक से यूरोप के कई देशों में सर्वहारा आंदोलन ने तेजी पकड़ी। 1918 में जर्मनी में मजदूरों-सैनिकों की बगावत शुरू हो गयी। पूंजीपति वर्ग व संशोधनवादी सामाजिक जनवादी पार्टी ने तत्कालीन राजा केसर विल्हेम की बलि चढ़ाकर क्रांति को रोकने की चेष्टा की पर वे सफल नहीं हुए और क्रांति आगे बढ़ती गयी। नवम्बर-दिसम्बर 18 में सोवियतों की तर्ज पर जर्मनी के प्रमुख शहरों में मजदूरों व सैनिकों की परिषदें कायम हो गईं। क्रांति आसन्न जानकर जर्मन पूंजीपति वर्ग ने क्रांति को रोकने के लिए सत्ता क्रांति से गद्दारी कर चुके सामाजिक जनवादी पार्टी के दक्षिणपंथी हिस्सों को सौंपने की राह पकड़ी। दिसम्बर 18 में मजदूरों-सैनिकों की परिषदों की कांग्रेस में दक्षिणपंथी सामाजिक जनवादी बहुमत हासिल करने में सफल हुए। इन दक्षिणपंथी सामाजिक जनवादियों ने क्रांति को आगे बढ़ाने के बजाय उसे खत्म करने का रास्ता अपनाया। मजदूर वर्ग की कुछ मांगों को स्वीकार कर इन्होंने मध्यमार्गी गद्दार काउत्स्की को अपने साथ मिला लिया और फिर फौजी अफसरों से मिलकर मजदूर आंदोलन का दमन शुरू किया । नवजात जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं लिब्नेख्त व रोजा लक्जमबर्ग को 15 जनवरी 1918 को गिरफ्तार कर उनकी हत्या कर दी। इस तरह दक्षिणपंथी सामाजिक जनवादियों ने क्रांति की पीठ में छुरा भोंक दिया। जर्मनी में क्रांति कुचल दी गयी।

जर्मनी के ही घटनाक्रम की पुनरावृत्ति अक्टूबर 1918 में आस्ट्रिया में हुई। मजदूर और सैनिकों की परिषदें जगह-जगह विद्रोह कर सत्ता अपने हाथ में लेने लगीं। वियना व अन्य स्थानों पर प्रदर्शनों में सारी सत्ता मजदूरों-सैनिकों की परिषदों को सौंपने की मांग होने लगी। जर्मनी की ही तरह आस्ट्रिया के पूंजीपति वर्ग ने सामाजिक जनवादियों को साथ लेकर एवं सम्राट चार्ल्स की बलि चढ़ाकर क्रांति को रोकने का प्रयास किया। सामाजिक जनवादियों, क्रिश्चियन सोशलिस्टों व जर्मन नेशनलों की संयुक्त सरकार ने क्रांति को क्रमशः खत्म करने का रास्ता अपनाया जिसमें उन्हें सफलता मिली।

इसी तरह हंगरी में क्रांति की शक्तियों को बढ़ता देख सम्राट चार्ल्स ने एक पूंजीवादी उदारपंथी कैरोलोई को सत्ता सौंपी व खुद सम्राट के पद से हट गया। इस तरह 16 नवंम्बर 1918 को हंगरी एक गणतंत्र राज्य बन गया। परंतु कैरोलोई का उदारपंथी शासन बहुत समय तक नहीं चल सका। जगह-जगह मजदूरों-सैनिकों की परिषदें कायम होने लगीं। 1919 की मार्च में बेलाकुन के नेतृत्व में कम्युनिस्टों व सोशलिस्टों की संयुक्त सरकार कायम हुई। जिसने जून 19 में हंगेरियन सोवियत गणतंत्र का विधान पास किया। हंगरी की इस क्रांति को कुचलने के लिए साम्राज्यवादियों ने देशी प्रतिक्रियावादियों के साथ मिलकर कोशिश की। आर्थिक नाके बंदी से लेकर प्रतिक्रांतिकारियों को हथियारों से लैस किया गया। फ्रांस अधिकृत इलाके में प्रतिद्वंद्वी सरकार स्थापित की गयी। अब एक तरफ से प्रतिक्रांतिकारियों की सेना व दूसरी तरफ से चेकोस्लोवाकिया व रूमानिया की सेनाओं ने क्रांतिकारी सरकार पर हमला बोल दिया और

क्रांति को खून में डुबो दिया। यहां भी सामाजिक जनवादियों ने पहले तो कम्युनिस्टों के साथ मोर्चा बनाया पर क्रांति के आगे बढ़ने पर वे अलग होकर क्रांति विरोधी हो गये। इस तरह 4 माह की हंगरी की सोवियत हुकूमत ध्वस्त हो गयी।

क्रांति की लहर इटली में भी 1919 में देखने को मिली पर तुर्राती सरीखे सुधारवादी नेताओं के ढुलमुल रुख के चलते व अन्ततः गद्दारी के चलते क्रांति न हो सकी और अन्त में इसने फासीवादियों की सत्ता हथियाने की राह आसान की।

अक्टूबर क्रांति के प्रभाव से ही 1918 में फ्रांस, ब्रिटेन में कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना हुई। स्पेन में बड़े पैमाने पर इस दौरान हड़तालें हुईं पर कम्युनिस्ट पार्टी 1920 में जाकर बन पाई। कई अन्य विकसित देशों में भी मजदूर संघर्ष आगे बढ़े।

उपरोक्त घटनाक्रम इस बात की तस्दीक करता है कि क्यों अक्टूबर क्रांति के साथ यूरोप में क्रांतियों के फैल जाने की वास्तविक संभावना पैदा हो चुकी थी। साम्राज्यवादियों के खूनी हमलों और सामाजिक जनवादियों की गद्दारी से ही इन क्रांतियों को रोका जा सका। भले ही क्रांतियां असफल हो गयीं पर इन्होंने इस बात की सत्यता को पुष्ट कर दिया कि अक्टूबर क्रांति के साथ साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा समाजवादी क्रांतियों का युग शुरू हो गया।

अभी जब यूरोपीय क्रांतियां चल रही थीं तो दूसरे इंटरनेशनल के काउत्स्की सरीखे नेताओं ने रूसी क्रांति के यूरोपीय क्रांति में तब्दील हो जाने की संभावना के खिलाफ झण्डा बुलन्द करते हुए बोल्शेविक कार्यनीति की आलोचना शुरू कर दी। उन्होंने बोल्शेवकों पर आरोप लगाया कि उन्होंने एक निश्चित तारीख तक यूरोपीय क्रांति के हो जाने पर अपना दांव लगाया जो गलत साबित हुआ। और अब बोल्शेविक यूरोप के सर्वहारागण पर रूसी क्रांति के परित्याग का आरोप लगा रहे हैं।

दूसरे छोर पर अक्टूबर क्रांति पर हमला बोलने का काम ट्राट्स्की ने किया। उसने अपने स्थायी क्रांति के सिद्धान्त के आधार पर घोषित कर दिया कि रूस में समाजवाद की विजय यूरोपीय क्रांतियों की विजय के बगैर असम्भव है। कि एक देश में समाजवाद का निर्माण असम्भव है।

महान सर्वहारा नेता लेनिन और स्तालिन ने काउत्स्की व ट्राट्स्की की बातों का जवाब दिया। लेनिन ने अपनी पुस्तिका 'सर्वहारा क्रांति और गद्दार काउत्स्की' में काउत्स्की के आरोपों का जवाब देते हुए बतलाया कि बोल्शेविकों ने निश्चय ही यूरोपीय क्रांति के होने की आशा पर आधारित कार्यनीति को अपनाया पर उन्होंने किसी निश्चित तारीख पर क्रांति होने की आशा पर आधारित कार्यनीति नहीं अपनाई। बोल्शेविक ही नहीं युद्ध से बहुत पहले सभी मार्क्सवादी इस बात पर सहमत थे कि यूरोपीय युद्ध एक क्रांतिकारी स्थिति उत्पन्न कर देगा। यहां तक कि काउत्स्की व दूसरे इंटरनेशनल का बैसेल घोषणा पत्र भी इसी बात को मानता था। अब अगर यूरोप में क्रांतिकारी स्थिति उत्पन्न हो गयी है तो निश्चय ही सभी क्रांतिकारियों को इस पर अपनी कार्यनीति आधारित करनी चाहिए और बोल्शेविकों ने यही किया। इसके आगे लेनिन कहते हैं-

> "बोल्शेविकों की कार्यनीति सही थी, वही **एकमात्र** अंतर्राष्ट्रीयतावादी कार्यनीति थी, क्योंकि वह विश्व क्रांति के कायरतापूर्ण भय पर नहीं, उसके प्रति क्षुद्रतापूर्ण "आस्थाहीनता" पर नहीं, बाकी सब कुछ की "रत्ती भर भी परवाह" न करते हुए "स्वयं अपनी" पितृभूमि की (स्वयं अपने पूंजीपति वर्ग की पितृभूमि की) रक्षा करने की संकुचित राष्ट्रवादी इच्छा पर नहीं बल्कि यूरोप की क्रांतिकारी परिस्थिति के एक सही (युद्ध से पहले और सामाजिक अंधराष्ट्रवादियों तथा सामाजिक शान्तिवादियों की गद्दारी से पहले, सार्वजनिक रूप से स्वीकृत) **मूल्यांकन** पर आधारित थी। यह कार्यनीति ही एकमात्र अंतर्राष्ट्रीयतावादी कार्यनीति थी, क्योंकि उसने **सभी देशों में** क्रांति को विकसित करने, उसे समर्थन प्रदान करने तथा उसकी जागृति फैलाने **के लिए** एक देश में यथासम्भव अधिकतम काम किया। यह कार्यनीति अपनी अत्यधिक सफलता द्वारा उचित सिद्ध हुई है, क्योंकि बोल्शेविज्म (रूसी बोल्शेविकों के गुणों के कारण कदापि नहीं, बल्कि हर जगह उस कार्यनीति के प्रति, जो व्यवहार में क्रांतिकारी है, **जनसाधारण** की सबसे गहरी सहानुभूति के कारण) **विश्व** बोल्शेविज्म बन गया है। उसने एक ऐसे विचार, ऐसे सिद्धान्त, ऐसे कार्यक्रम तथा कार्यनीति को जन्म दिया है जो ठोस रूप से और व्यवहारतः सामाजिक अंधराष्ट्रवाद और सामाजिक शांतिवाद की कार्यनीति से भिन्न है।" (सर्वहारा क्रांति तथा गद्दार काउत्स्की, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता, लेख संग्रह-लेनिन पृष्ठ 102, प्रगति प्रकाशन मास्को)

इस तरह स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति से यूरोपीय क्रांति की शुरुआत की उम्मीद तत्कालीन यूरोप की क्रांतिकारी परिस्थितियों के ठोस मूल्यांकन पर आधारित थी। बोल्शेविकों ने यूरोपीय क्रांति के शुरू होने की उम्मीद जरूर लगायी थी पर सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण या उसके टिकने के बारे में सारी संभावनाएं दूसरे देशों की क्रांतियों पर ही नहीं टिका रखी थीं। जैसा कि ट्राट्स्की का मानना था बल्कि बोल्शेविक अपने दम पर सोवियत समाजवाद के निर्माण की दिशा में आगे बढ़े। अन्य देशों में क्रांति सफल न होने से उनके सामने कठिनाईयां कहीं अधिक पैदा हुईं पर अन्ततः वे क्रांति को टिकाने में कामयाब हुए। इस संदर्भ में स्टालिन की ये बातें मौजू हैं-

> "अक्टूबर क्रांति का विश्व व्यापी महत्व केवल इसी बात से नहीं है कि वह एक देश द्वारा साम्राज्यवाद की व्यवस्था में दरार डालने की महान शुरुआत है और वह साम्राज्यवादी देशों के समुद्र में समाजवाद का पहला केन्द्र है। उसका विश्व व्यापी महत्व इस बात में भी है कि वह विश्व क्रांति का पहले दौर उसके आगे विकास के लिए शक्तिशाली आधार है।
>
> "इसलिए सिर्फ वे ही लोग गलत नहीं हैं जो अक्टूबर क्रांति के अंतराष्ट्रीय स्वरूप को भूल जाते हैं और एक देश में समाजवाद की विजय को एकदम राष्ट्रीय और केवल राष्ट्रीय घटना करार देते हैं। वे लोग भी गलत हैं जो अक्टूबर क्रांति के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को तो याद रखते हैं मगर इस क्रांति को निष्क्रिय और सिर्फ बाहर से मदद पाने वाली मानते हैं। असल बात यह है कि न सिर्फ अक्टूबर क्रांति को दूसरे देशों में क्रांति की मदद की जरूरत है बल्कि उन देशों में क्रांति को अक्टूबर

क्रांति से मदद की जरूरत है ताकि विश्व साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के ध्येय को तेज किया जा सके और बढ़ाया जा सके।"

(अक्टूबर क्रांति में बोल्शेविकों की कार्यनीति-स्तालिन,मार्क्सिस्ट इंटरनेट आर्काइव, अनुवाद हमारा)

b. उपनिवेशों और निर्भर देशों के शान्तिपूर्ण शोषण-उत्पीड़न के युग का अन्त

"अक्टूबर क्रांति ने साम्राज्यवाद को इसके प्रभुत्व के केन्द्रकों में ही नहीं हिला दिया है बल्कि औपनिवेशिक व निर्भर देशों में साम्राज्यवाद के शासन को कमजोर करके साम्राज्यवाद के पृष्ठभाग पर इसकी परिधि पर भी प्रहार किया है।

... ...

"पहले यह "स्थापित" विचार था कि उत्पीड़ित राष्ट्रों की मुक्ति का एक मात्र तरीका पूंजीवादी राष्ट्रवाद का तरीका है। जो राष्ट्रों को एक-दूसरे से दूर ले जाने का तरीका है, राष्ट्रों में फूट डालने का तरीका है, विभिन्न राष्ट्रों के मेहनतकश जनसमुदाय के बीच राष्ट्रीय दुश्मनी तेज करने का तरीका है।

"इस किंवदंति को अब खंडित माना जाना चाहिए। अक्टूबर क्रांति के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक यह है कि इसने व्यवहार में उत्पीड़ित लोगों की मुक्ति के लिए सर्वहारा, अंतर्राष्ट्रीयतावादी तरीके की संभावना और औचित्य को एकमात्र सही तरीके के बतौर प्रदर्शित करके व्यवहार में स्वैच्छिकता और अंतराष्ट्रवाद के सिद्धान्तों पर आधारित अत्यंत विविध राष्ट्रों के मजदूरों और किसानों के बिरादाराना संघ की संभावना और औचित्य को प्रदर्शित करके इस किंवदंति पर घातक प्रहार किया है।

... ...

"उपनिवेशों और निर्भर देशों के शान्तिपूर्ण शोषण और उत्पीड़न का युग **समाप्त हो गया है।**

"उपनिवेशों और निर्भर देशों को मुक्त करने वाली क्रांतियों का युग, इन देशों में सर्वहारा वर्ग के जागृत होने का युग, क्रांति में इनके प्रभुत्व का युग **शुरू हो चुका है।**" (अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र- स्तालिन)

अक्टूबर क्रांति ने न केवल विश्व सर्वहारा समाजवादी क्रांतियों को आगे बढ़ने में मदद की बल्कि उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं व साम्राज्यवाद द्वारा गुलाम बनाये गये उपनिवेशों की जनता के मुक्ति संघर्षों की भी भारी मदद की। अक्टूबर क्रांति के पहले दुनिया पूंजीवादी क्रांतियों के युग में थी। उत्पीड़ित राष्ट्रीयतायें व उपनिवेश भी मुक्ति के लिए पूंजीवादी राष्ट्रवाद का ही सहारा लेकर आगे बढ़ते थे। पर अक्टूबर क्रांति ने पूंजीवादी क्रांतियों के युग का अंत कर दिया और सर्वहारा समाजवादी क्रांतियों का युग शुरू किया। यानी अब उत्पीड़ित राष्ट्रों-उपनिवेशों की राष्ट्रीय मुक्ति का संघर्ष भी सर्वहारा नेतृत्व में लड़ा जाना था जिसका अन्तिम लक्ष्य पूंजीवाद नहीं समाजवाद होना था। इन अर्थों में अब राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष विश्व सर्वहारा समाजवादी क्रांति का अभिन्न अंग बन गये।

इन्हीं बातों को माओ ने अपने लेख 'नवजनवाद के बारे में' में कुछ इस प्रकार वर्णित किया है-

"प्रथम साम्राज्यवादी विश्व युद्ध ने और प्रथम विजयी समाजवादी क्रांति यानी अक्टूबर क्रांति ने विश्व इतिहास की समूची धारा को बदल दिया है और एक नये युग का सूत्रपात किया है।

"यह एक ऐसा युग है जिसमें विश्व पूंजीवादी मोर्चा भूमण्डल के एक भाग में (दुनिया के छठे भाग में) धराशायी हो गया है और अन्य भागों में अपनी पतनोन्मुखता को पूरी तरह प्रकट कर चुका है, जिसमें बाकी बचे हुए पूंजीवादी भाग उपनिवेशों और अर्द्ध उपनिवेशों पर और अधिक निर्भर रहे बिना अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकते, जिसमें एक समाजवादी राज्य स्थापित हो चुका है और यह घोषणा कर चुका है कि वह तमाम उपनिवेशों व अर्द्ध उपनिवेशों के मुक्ति आंदोलन का सक्रियता से समर्थन करेगा ओर जिसमें पूंजीवादी देशों का सर्वहारा वर्ग दिन-ब-दिन अपने आपको सामाजिक साम्राज्यवादी स्वरूप वाली सामाजिक जनवादी पार्टियों के प्रभाव से मुक्त करता जा रहा है और उपनिवेशों व अर्द्ध उपनिवेशों के मुक्ति आंदोलन के प्रति अपने समर्थन का ऐलान कर चुका है। इस युग में किसी भी औपनिवेशिक अथवा अर्द्धऔपनिवेशिक देश की कोई भी क्रांति, जो साम्राज्यवाद अर्थात अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद के विरुद्ध हो, पूंजीवादी जनवादी विश्व-क्रांति की पुरानी श्रेणी में नहीं आती, बल्कि नई श्रेणी में आती है। वह अब पुरानी किस्म की पूंजीपति वर्ग की या पूंजीवादी विश्व-क्रांति का हिस्सा नहीं है, बल्कि नई विश्व क्रांति, यानी विश्व की सर्वहारा-समाजवादी क्रांति का हिस्सा है। इस प्रकार के क्रांतिकारी उपनिवेशों और अर्द्ध उपनिवेशों को अब विश्व पूंजीवाद के प्रतिक्रांतिकारी मोर्चे के संश्रयकारी नहीं समझा जा सकता : वे विश्व समाजवाद के क्रांतिकारी मोर्चे के संश्रयकारी बन गये हैं। (नव-जनवाद के बारे में- माओ त्से तुंग, संकलित रचनायें-खण्ड-2,पृष्ठ 609)

इस तरह से महान अक्टूबर क्रांति ने न केवल साम्राज्यवादी मुल्कों के सर्वहारा आंदोलन को प्रभावित किया बल्कि उपनिवेशों व उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के मुक्ति संघर्षों को भी पुरानी पूंजीवादी क्रांति के झण्डे से खींचकर समाजवादी क्रांति के झण्डे तले ला दिया। माओ आगे बताते हैं कि यद्यपि औपनिवेशिक व अर्ध औपनिवेशिक देश में क्रांति की पहली मंजिल अपने सामाजिक स्वरूप में अभी भी बुनियादी तौर पर पूंजीवादी जनवादी ही है इसका वस्तुगत उद्देश्य पूंजीवाद के विकास का रास्ता साफ करना ही है, फिर भी यह क्रांति पूंजीपति वर्ग के नेतृत्व में चलने वाली पुरानी किस्म की वह क्रांति नहीं रह गयी जिसका उद्देश्य पूंजीपति वर्ग के अधिनायकत्व वाले पूंजीवादी समाज की स्थापना करना हो । बल्कि अब यह सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में नये किस्म की क्रांति है जिसका ध्येय पहली मंजिल में क्रांतिकारी वर्गों के संयुक्त मोर्चे के अधिनायकत्व वाले नव-जनवादी समाज की स्थापना करना है। इस प्रकार यह क्रांति वस्तुतः समाजवाद के विकास के पथ को प्रशस्त करती है। यह नव-जनवादी क्रांति है।

अक्टूबर क्रांति की पहली वर्षगांठ पर ही स्तालिन ने बताया था कि अक्टूबर क्रांति का विश्व व्यापी महत्व इस बात में निहित है कि इसने राष्ट्रीय सवाल के दायरे को व्यापकतर बना दिया है और उसे यूरोप में राष्ट्रीय उत्पीड़न का मुकाबला करने के खास प्रश्न

से उत्पीड़ित जनगण, उपनिवेशों व अर्धउपनिवेशों को साम्राज्यवाद से मुक्त करने के आम प्रश्न में परिवर्तित कर दिया है। अक्टूबर क्रांति ने उनकी मुक्ति के लिए व्यापक संभावनायें खोल दी हैं। और उनकी ओर बढ़ने के सही रास्ते खोल दिये हैं। इस तरह पश्चिम व पूर्व के उत्पीड़ित जनगण के मुक्ति कार्य को अक्टूबर क्रांति ने आगे बढ़ाया है और उन्हें साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष की विशाल धारा में शामिल कर दिया है।

अगर पिछली सदी के इतिहास पर एक नजर डाली जाये तो हम राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की आंधी को घटता हुआ देखते हैं। इस आंधी ने साम्राज्यवाद के पृष्ठभाग पर हमला कर उसे कमजोर किया। उपनिवेशों-अर्धउपनिवेशों में पैदा हुए राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की मूल गति आन्तरिक ही थी। अर्थात इन समाजों की जनता और साम्राज्यवाद के अंतर्विरोध के गहराने से ही यहां राष्ट्रीय मुक्ति की चेतना पैदा हुई व संघर्ष आगे बढ़े। अक्टूबर क्रांति व समाजवादी खेमे की मौजूदगी ने इन संघर्षों में भारी उत्प्रेरण का काम किया। परिणाम यह हुआ कि एक के बाद एक देश साम्राज्यवादियों की प्रत्यक्ष गुलामी से मुक्त होने लगे। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की लहर सी आ गई। अक्टूबर क्रांति और बाद में कायम हुए समाजवादी खेमे के सहयोग-समर्थन के बगैर यह आंधी पैदा ही नहीं हो सकती थी। इस बात का प्रमाण और कुछ नहीं तो केवल यही तथ्य है कि जब 1976 में चीन में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के साथ समाजवादी क्रांतियों की पहली श्रंखला समाप्त हो गयी तो फिर राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की आंधी भी थम गई। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की इस आंधी के थमने तक अधिकांश उपनिवेश-अर्धउपनिवेश साम्राज्यवाद की प्रत्यक्ष गुलामी से मुक्ति पा चुके थे। एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिका कोई भी महाद्वीप इस लहर से अछूता नहीं रहा।

अक्टूबर क्रांति की धमक को चीन के 4 मई 1919 के आंदोलन में देखा गया जो जापान को चीन में विशेषाधिकार दिये जाने के खिलाफ छात्रों के संघर्ष से शुरू हुआ और श्रमिकों के संघर्ष में तब्दील हो गया। 1921 में तीसरे इंटरनेशनल के सहयोग से चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हो गया जिसने भविष्य के मुक्ति संघर्ष की पहलकदमी क्वोमितांङ की जगह अपने हाथ में ले ली। अक्टूबर क्रांति की धमक को लातिन अमेरिका में देखा गया। जहां स्थानीय मार्क्सवादी पार्टियां पैदा हो गयीं। इस धमक को भारत के मुक्ति संघर्ष में देखा गया जहां 1920 के दशक का मध्य आते आते एक साथ कई जगहों से (देश के भीतर व देश के बाहर) कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के प्रयास शुरू हो गये।

B. क्रांति के सबक : लेनिनवाद व तीसरा इंटरनेशनल

"अक्टूबर क्रांति को महज आर्थिक व सामाजिक-राजनैतिक सम्बन्धों के क्षेत्र में ही क्रांति नहीं माना जा सकता। यह इसके साथ ही दिमागों में क्रांति है, मजदूर वर्ग की विचारधारा में क्रांति है। अक्टूबर क्रांति मार्क्सवाद के परचम तले, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के विचार के परचम तले, लेनिनवाद के परचम तले, जो साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांतियों के युग का मार्क्सवाद है, पैदा हुई और उसने ताकत ग्रहण की। अतः यह सुधारवाद पर मार्क्सवाद के विजय की परिचायक थी, यह सामाजिक जनवाद पर लेनिनवाद के विजय की परिचायक थी, यह द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय पर तीसरे इण्टरनेशनल की विजय की सूचक थी।" (अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र-स्तालिन)

"रूस में सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता पर अधिकार किये जाने (25 अक्टूबर यानी 7 नवम्बर 1917) के बाद पहले कुछ महीनों तक यह लगता था कि पिछड़े हुए रूस और पश्चिमी यूरोप के उन्नत देशों के बीच इतना भारी अन्तर है कि इन देशों में जो सर्वहारा क्रांति होगी उसमें और हमारी क्रांति में कोई विशेष समानता नहीं रहेगी। परन्तु अब हमें काफी अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त हो चुका है और उससे बहुत स्पष्टता के साथ यह प्रकट होता है कि हमारी क्रांति की कुछ बुनियादी विशेषताएं ऐसी हैं जिनका स्थानीय या विशिष्ट रूप से राष्ट्रीय, अथवा रूसी महत्व ही नहीं है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय महत्व है। यहां आम अंतर्राष्ट्रीय महत्व से ही मेरा मतलब नहीं है, हमारी क्रांति की दो चार विशेषताएं नहीं, बल्कि सभी बुनियादी विशेषताएं और बहुत सी गौण विशेषताएं भी इस मानी में अंतर्राष्ट्रीय महत्व की हैं कि इस क्रांति का सभी देशों पर प्रभाव पड़ता है। नहीं, यदि हम अंतर्राष्ट्रीय महत्व शब्द का इस्तेमाल अति संकुचित अर्थ में भी करें, यानी यदि उसका हम यह मतलब लगायें कि हमारे देश में जो कुछ हुआ है, वह अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से सत्य है, या यह कि हमारे देश में जो कुछ हुआ है उसका अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर दुहराया जाना ऐतिहासिक रूप से अवश्यम्भावी है, तो हमें मानना पड़ेगा कि हमारी क्रांति की कुछ बुनियादी विशेषताओं का इस माने में भी अंतर्राष्ट्रीय महत्व है।

"बेशक इस सच्चाई को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर देखना और उसे हमारी क्रांति की केवल बुनियादी विशेषताओं पर ही लागू न करना बहुत बड़ी गलती होगी। इस बात को अनदेखा कर देना भी गलत होगा कि उन्नत देशों में से कम से कम एक में जब सर्वहारा -क्रांति सफल हो जायेगी, तब हो सकता है कि परिस्थितियों में यकायक एक बड़ा परिवर्तन आ जाये, अर्थात उसके जल्द ही बाद रूस ("सोवियत" एवं समाजवादी दृष्टि से) आदर्श देश न रह जाये अर्थात एक बार फिर पिछड़ा हुआ देश बन जाये।" ("वामपंथी" कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज-लेनिन, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता लेख संग्रह, पृष्ठ 199-200, प्रगति प्रकाशन, मास्को)

स्तालिन एवं लेनिन की उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति ने विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन को कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सबक प्रदान किये जो अंतर्राष्ट्रीय महत्व के थे जिन्हें भविष्य की सभी क्रांतियों में दोहराया जाना था, कि मार्क्सवाद का अब लेनिनवाद के स्तर तक विकास हो गया। लेनिनवाद अपने में उन सभी बातों को समेटता है जो अक्टूबर क्रांति से उत्पन्न हुए ऐतिहासिक सबक थे।

लेनिनवाद को विश्लेषित करते हुए स्तालिन ने बताया के लेनिनवाद साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति के युग का मार्क्सवाद है, कि लेनिनवाद सामान्य रूप से सर्वहारा तानाशाही का सिद्धान्त व कार्यनीति है।

स्तालिन अकारण ही सर्वहारा तानाशाही पर जोर नहीं देते हैं। वस्तुतः अक्टूबर क्रांति से पहले तक सामाजिक जनवादी पार्टियां सर्वहारा तानाशाही के विचार को खुलेआम खारिज करने से बचती थीं परन्तु व्यवहारतः इस विचार को हासिल करने के लिए कुछ नहीं करती थीं। चूंकि अभी क्रांतियों का काल शुरू नहीं हुआ था इसलिए सामाजिक जनवाद को औपचारिक तौर पर मार्क्सवाद सरीखा ही समझा जाता था। परन्तु अक्टूबर क्रांति की विजय के दौरान मार्क्सवाद की आत्मा को पहले ही त्याग चुका सामाजिक जनवाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व, अक्टूबर क्रांति के विरुद्ध अवस्थिति अपना कर मार्क्सवाद का परचम भी त्याग देता है।

इस तरह प्रथम सर्वहारा अधिनायकत्व के प्रति रुख ने सामाजिक जनवाद व मार्क्सवाद के बीच निर्णायक विच्छेद पैदा कर दिया। प्रथम सर्वहारा अधिनायकत्व के विरोधी सामाजिक जनवादी मार्क्सवादी नहीं रह गये और मार्क्सवाद के वास्तविक वाहक लेनिनवादी बन गये।

सामाजिक जनवादी पहला विश्व युद्ध छिड़ने पर साम्राज्यवादी पितृभूमि की रक्षा में जुट कर और बाद में अक्टूबर क्रांति को खारिज करके मजदूर आंदोलन में पूंजीपति वर्ग के एजेण्ट बन गये। इसीलिए अक्टूबर क्रांति व लेनिनवाद का एक महत्वपूर्ण सबक यह है कि मजदूर आंदोलन से सामाजिक जनवाद को समाप्त किये बगैर पूंजीवाद का खात्मा असंभव है।

लेनिनवाद बतलाता है कि पूंजीवाद अपनी अंतिम पतनशील अवस्था एकाधिकारी पूंजीवाद अर्थात साम्राज्यवाद में पहुंच चुका है। साम्राज्यवाद के युग में पूंजीवाद के अंतरर्विरोध अपनी चरम सीमा तक पहुंच जाते हैं इसीलिए सर्वहारा क्रांति एक तात्कालिक और व्यावहारिक प्रश्न बन जाता है। साम्राज्यवाद के साथ ही सर्वहारा क्रांति के युग की भी शुरुआत हो जाती हैं।

लेनिनवादी पद्धति जो सार रूप में आलोचनात्मक और क्रांतिकारी है, दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादियों के सैद्धान्तिक मतवादों को चुनौती देते हुए स्थापित हुई। इन मतवादों में कुछ इस प्रकार थे-सर्वहारा को तब तक सत्ता पर कब्जा नहीं करना चाहिए जब तक अपने देश में उसका बहुमत नहीं हो जाता, सर्वहारा वर्ग के पास जब तक शासन का भार संभालने और उसका संगठन करने की योग्यता रखने वाले दक्ष शासक व शिक्षक न हो तब तक वह राज शक्ति को अपने हाथ में नहीं रख सकता, राजनीतिक आम हड़ताल को मजदूर वर्ग अपना अस्त्र नहीं बना सकता चूंकि वह सिद्धान्ततः गलत होने के साथ काफी खतरनाक है। लेनिनवाद ने इन सभी मतवादों का खण्डन कर दिखाया कि ये सभी मतवाद क्रांति को अनन्त काल तक टालने व इस तरह पूंजीवाद की रक्षा के हथकंडे हैं।

सर्वहारा क्रांति के लिए सिद्धान्तों का महत्व लेनिन के इन शब्दों से समझा जा सकता है कि क्रांतिकारी सिद्धान्त के बिना क्रांतिकारी आंदोलन भी असंभव है। इस तरह लेनिनवाद क्रांतिकारी सिद्धान्त को अतीव महत्व देता है। लेनिनवाद ने स्वतःस्फूर्ति की उपासना के सिद्धान्त को खारिज किया और दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं के सिद्धान्तों के प्रति अवसरवादी रुख का खंडन किया जो साम्राज्यवादी युद्ध शुरू होने से पहले 'युद्ध के विरुद्ध युद्ध' की धमकी देते हैं पर युद्ध शुरू होने पर इस नारे को त्याग साम्राज्यवादी पितृभूमि की रक्षा में जुट जाते हैं। इसके बरक्स लेनिनवाद सर्वहारा क्रांति का क्रांतिकारी सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जो बतलाता है कि साम्राज्यवाद के युग की शुरूआत के साथ पूंजीवादी देशों के अन्दर क्रांतिकारी संकट गहराने लगता है जिससे इन देशों में सर्वहारा क्रांति शुरू होने की संभावना पैदा हो जाती है। यह बतलाता है कि औपनिवेशिक देशों में भी क्रांतिकारी संकट गहराने लगता है और यहां साम्राज्यवाद विरोधी क्रांति के तत्व एकत्र होने लगते हैं। यह बतलाता है कि साम्राज्यवादी व्यवस्था में साम्राज्यवादी ताकतों के बीच दुनिया के बंटवारे को होने वाला संघर्ष और युद्ध लाजिमी है। ये युद्ध साम्राज्यवादी देशों की सर्वहारा क्रांति व औपनिवेशिक देशों की औपनिवेशिक मुक्ति की ताकतों को एक विश्व व्यापी संयुक्त मोर्चे में इकट्ठा होने का आधार पैदा करते है। कुल मिलाकर इस तरह साम्राज्यवाद समाजवादी क्रांतियों का आरम्भ काल है।

सर्वहारा क्रांति के लिए इस सिद्धान्त के साथ ही विकसित देशों में ही क्रांति होने की सोच बदल गयी। अब क्रांति होने की संभावना वहां अधिक हो गयी जहां विश्वव्यापी साम्राज्यवादी मोर्चे की जंजीर की सबसे कमजोर कड़ी हो। इसीलिए यह कड़ी पिछड़े औपनिवेशिक देशों में भी टूट सकती है। रूस में यह कड़ी सबसे कमजोर थी इसलिए अक्टूबर क्रांति द्वारा सबसे पहले इसे रूस में तोड़ दिया गया।

सर्वहारा तानाशाही के महत्व पर बारम्बार जोर देते हुए लेनिनवाद बतलाता है कि सर्वहारा क्रांति का एक अस्त्र सर्वहारा तानाशाही है। यह पूंजीपति वर्ग पर सर्वहारा के प्रभुत्व का साधन है और सोवियतें सर्वहारा तानाशाही का राजनैतिक स्वरूप हैं। पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्ध और समाजवादी उत्पादन सम्बन्ध गुणात्मक तौर पर भिन्न होते हैं यह एक वर्गीय समाज से दूसरे वर्गीय समाज में बदलने का मामला नहीं है यह वर्गीय समाज से वर्ग हीन समाज की ओर बढ़ने का मामला है इसीलिए पूंजीवादी समाज की राजसत्ता का उपयोग सर्वहारा अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए नहीं कर सकता। उसे पूंजीवादी मशीनरी का ध्वंस कर भिन्न मशीनरी का निर्माण करना पड़ता है इसीलिए पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण शांतिपूर्ण तरीके से नहीं हो सकता। चूंकि सर्वहारा पूंजीवादी मशीनरी का उपयोग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नहीं कर सकता इसलिए सर्वहारा तानाशाही का उदय पूंजीवादी राज्य व्यवस्था उसकी पुलिस, फौज, नौकरशाही के ध्वंस के परिणाम के रूप में ही हो सकता है। इसलिए बलपूर्वक क्रांति और क्रांति उपरांत दुश्मन वर्गों पर नियंत्रण के लिए सर्वहारा तानाशाही अनिवार्य है।

लेनिनवाद सर्वहारा वर्ग के दृढ़ संश्रयकारी के रूप में किसानों को सामने लाता है। जहां जनवादी क्रांति में समूचा किसान समुदाय सर्वहारा के मित्र की भूमिका निभाता है। वहीं समाजवादी क्रांति में गरीब किसान सर्वहारा के संश्रयकारी की भूमिका निभाता है

इस तरह लेनिनवाद ने किसानों की क्रांतिकारी शक्ति को चिह्नित किया व उन्हें सर्वहारा के झण्डे तले लाने पर बल दिया। उन देशों में जहां सर्वहारा आबादी बहुत कम थी वहां बगैर किसानों के मेहनतकश हिस्से को साथ लिए क्रांति असंभव थी।

लेनिनवाद ने जातीय समस्या का विश्लेषण कर उत्पीड़ित जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन किया। लेनिनवाद ने जातीय समस्या को विस्तारित कर औपनिवेशिक समस्या को भी इसके दायरे में लाते हुए उपनिवशों के साम्राज्यवाद से मुक्ति संघर्षों का समर्थन किया।

लेनिनवाद ने सर्वहारा क्रांति के लिए ऐसी रणनीति और रणकौशल प्रस्तुत किये जिनमें से बहुतों का अंतर्राष्ट्रीय महत्व था।

लेनिनवाद ने सर्वहारा क्रांति के लिए मजदूर वर्ग के नये तरीके के संगठन एक लड़ाकू पार्टी, एक कुशल पार्टी का सिद्धान्त पेश किया। रूस में बोल्शेविक पार्टी के रूप में इसको संगठित भी किया। एक ऐसी पार्टी जो बेहद अनुशासित, क्रांतिकारी सिद्धान्त से लैस, व्यवहार में प्रशिक्षित हो, के बिना सर्वहारा क्रांति व सर्वहारा तानाशाही असम्भव है। यह पार्टी सर्वहारा के वर्ग संगठन का सर्वोच्च रूप है। इस तरह बोल्शेविक पार्टी की तरह की पार्टी भविष्य की क्रांतियों के लिए एक आवश्यक शर्त बन गयी। दूसरे इंटरनेशनल की पार्टियों के क्रांतिकारी परिस्थिति उत्पन्न होने पर क्रांति को आगे बढ़ाने में सर्वथा अयोग्यता ने भी दिखाया कि क्रांति के लिए बोल्शेविक पार्टी सरीखी कम्युनिस्ट पार्टी जरूरी है।

लेनिनवाद की उपरोक्त सभी बातों से विश्व सर्वहारा आंदोलन समृद्ध हुआ और दुनिया भर के कम्युनिस्ट इन्हें अपने संघर्षों में लागू करने लगे। रूसी क्रांति के बगैर मार्क्सवादी सिद्धान्त के लेनिनवाद तक पहुंचने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

अक्टूबर क्रांति से पूर्व ही जब द्वितीय इंटरनेशनल के नेताओं की क्रांति से गद्दारी जगजाहिर हो चुकी थी तभी 1915 में लेनिन ने तीसरे इंटरनेशनल के गठन की आवश्यकता घोषित कर दी थी। तब इस संदर्भ में लेनिन ने कहा था-

> "यह बिलकुल स्पष्ट है कि एक **अंतर्राष्ट्रीय** मार्क्सवादी संगठन बनाने के लिए जरूरी है कि **विभिन्न** देशों में स्वतंत्र मार्क्सवादी पार्टियों की स्थापना करने के लिए तत्परता हो। सबसे पुराने और सबसे मजबूत मजदूर आंदोलन वाले देश के रूप में जर्मनी का निर्णायक महत्व है। निकट भविष्य में यह प्रकट हो जायेगा कि एक नए, मार्क्सवादी इंण्टरनेशनल की स्थापना के लिए परिस्थितियां परिपक्व हो चुकी हैं, अथवा नहीं। अगर वे हो चुकी हैं तो हमारी पार्टी खुशी से ऐसे तीसरे इंटरनेशनल में शरीक होगी, जो अवसरवाद और अंधराष्ट्रवाद के पाप से मुक्त कर दिया गया हो। अगर नहीं हुई हैं, तो उससे यह पता चलेगा कि इस मुक्ति के लिए क्रमिक विकास के कमोबेश लंबे दौर की जरूरत है। वैसी हालत में हमारी पार्टी उस समय तक पुराने इंटरनेशनल के भीतर चरम विरोध पक्ष बन कर रहेगी, जब तक विभिन्न देशों में परिस्थितियां ऐसी नहीं हो जाती कि क्रांतिकारी मार्क्सवाद पर आधारित एक अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संघ की स्थापना संभव हो सके।" (समाजवाद और युद्ध (उद्धरण), लेनिन, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता, लेख संग्रह पृष्ठ 54-55, प्रगति प्रकाशन मास्को)

बाद में जब 1917 में रूस में ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गई तभी अप्रैल 1917 में लेनिन ने जिम्मरवाल्ड इंटरनेशनल के पतन की घोषणा करते हुए तीसरे इंटरनेशनल के तत्काल गठन की पहलकदमी की आवश्यकता पर बल दिया था। तीसरे इंटरनेशनल की स्थापना 2-6 मार्च 1919 को हुई। इस इंटरनेशनल के बारे में लेनिन लिखते हैं :

> "पहले इंटरनेशनल (1864-1872) ने पूंजी के खिलाफ मजदूरों के क्रांतिकारी धावे की तैयारी के लिए उनके अंतर्राष्ट्रीय संगठन की नींव डाली। दूसरा इंटरनेशनल (1889-1914) सर्वहारा आंदोलन का एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन था जिसका **फैलाव** बढ़ा, लेकिन बदले में क्रांतिकारी स्तर अस्थायी रूप से गिर गया। अवसरवाद की शक्ति में अस्थायी रूप से वृद्धि हुई, जिसके फलस्वरूप अंत में इस इण्टरनेशनल का अपमानजनक ध्वंस हो गया।
>
> "तीसरे इण्टरनेशनल का जन्म वास्तव में 1918 में हुआ जब अवसरवाद तथा सामाजिक अंधराष्ट्रवाद के विरुद्ध लंबे वर्षों तक, खास तौर पर युद्ध के दौरान चलने वाले संघर्ष के फलस्वरूप कई देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना हुई। बाजाब्ता तौर पर तीसरे इंटरनेशनल की स्थापना मार्च 1919 में मास्को में उसकी पहली कांग्रेस में हुई। और इस इंटरनेशनल की सबसे लाक्षणिक विशेषता अर्थात मार्क्सवाद के आधार-सूत्रों को पूरा करने, उन्हें व्यवहार में लागू करने और समाजवाद तथा मजदूर वर्ग के आंदोलन के युगों पुराने आदर्शों का साकार रूप देने का उसका ध्येय-तीसरे इंटरनेशनल की यह सबसे लाक्षणिक विशेषता तुरंत इस बात में व्यक्त हुई है कि नया, तीसरा "अंतर्राष्ट्रीय मजूदर संघ" **विकसित होकर अभी से** कुछ हद तक **सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ का रूप धारण करने लगा है।**
>
> "पहले इंटरनेशनल ने समाजवाद के लिए सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष की नींव डाली।
>
> "दूसरे इंटरनेशनल का काल वह था जब कई देशों में इस आंदोलन के व्यापक तथा जनव्यापी रूप से फैलने के लिए जमीन तैयार की गयी।
>
> "तीसरे इंटरनेशनल ने दूसरे इंटरनेशनल के काम के फल बटोरे, उसकी अवसरवादी, सामाजिक अंधराष्ट्रवादी, पूंजीवादी तथा निम्न पूंजीवादी खोट को निकाल फेंका और उसने सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को **व्यवहार में लागू करना आरंभ कर दिया है।**
>
> ... ...
>
> "दिवालिया दूसरा इंटरनेशनल अब मर रहा है और जिंदा ही सड़ रहा है। वास्तव में वह अंतर्राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की जी हुजूरी करने वाले की भूमिका अदा कर रहा है। यह वास्तव में एक पीला इंटरनेशनल है। ... ...
>
> "पूंजीवादी जनवाद के दिन पूरे हो चुके हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे दूसरे इंटरनेशनल के दिन पूरे हो चुके हैं, ...
> (तीसरा इंटरनेशनल और इतिहास में उसका स्थान- लेनिन, पृष्ठ 140, वही)

1914 में द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने के साथ दूसरे इंटरनेशनल के सामाजिक जनवादी पहले की तय नीति अर्थात युद्ध के विरुद्ध युद्ध छेड़ने से पीछे हट गये। और उन्होंने मजदूर वर्ग से गद्दारी कर अपने साम्राज्यवादी पूंजीपतियों का साथ देना शुरू कर दिया। अब वे साम्राज्यवादी पितृभूमि की रक्षा का नारा बुलन्द करने लगे। ऐसे में बोल्शेविक पार्टी ही युद्ध के विरुद्ध युद्ध छेड़ने की सही सर्वहारा नीति पर कायम रही। अक्टूबर क्रांति जब सफल हो गयी तो इसकी प्रेरणा से 1918 में कई देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना हुई और इन्हीं पार्टियों ने मिलकर तीसरे इंटरनेशनल का गठन किया। अक्टूबर क्रांति के बगैर तीसरे इंटरनेशनल की सफलता के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था।

तीसरे इंटरनेशनल के रूप में दुनिया भर के कम्युनिस्टों का एक ऐसा केन्द्र कायम हुआ जिसने आने वाले वक्त में पूंजीवादी देशों के साथ-साथ औपनिवेशिक देशों में क्रांतिकारियों को नेतृत्व प्रदान किया। एक रूप में अक्टूबर क्रांति के अंतर्राष्ट्रीय महत्व को व्यवहार में उतारने का जिम्मा तीसरे इंटरनेशनल ने उठाया। तीसरे इंटरनेशनल की पहले कांग्रेस में 'सभी देशों के मजदूरों के नाम अपील' निकाली गयी। इस कांग्रेस ने बुर्जुआ जनतंत्र और सर्वहारा तानाशाही पर लेनिन द्वारा प्रस्तुत थिसिस पारित की। इसने दूसरे इंटरनेशनल की बर्न कांग्रेस पर प्रस्ताव पारित किया। इस कांग्रेस ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की अस्थायी कार्यकारिणी नियुक्त की।

तीसरे इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस जुलाई-अगस्त 1920 में हुई। इस कांग्रेस ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के बुनियादी कार्यभार, सर्वहारा क्रांति में कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका, राष्ट्रीय व औपनिवेशिक प्रश्न पर थिसिस, ट्रेड यूनियन आंदोलन, फैक्ट्री काउंसिल व कम्युनिस्ट इंटरनेशनल पर थिसिस, कम्युनिस्ट पार्टी और संसद पर थिसिस, इंटरनेशनल में प्रवेश की शर्तें व कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस का घोषणापत्र पारित किया।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की पहली दो कांग्रेसों के दौरान विश्व क्रांति आगे बढ़ती प्रतीत हो रही थी। इसीलिए इंटरनेशनल का जोर सामाजिक जनवादियों से अलग होकर कम्युनिस्ट पार्टियों की स्थापना कर क्रांति को आगे बढ़ाने पर था। इसी दौरान सितम्बर 1920 में बाकू में पूर्व के लोगों की पहली कांग्रेस हुई। परन्तु जुलाई 1921 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की तीसरी कांग्रेस आते-आते यह स्पष्ट हो चुका था कि सोवियत रूस को छोड़ बाकी देशों में क्रांति असफल हो चुकी है। ऐसे में पूंजीवाद फिर से स्थिर हो मेहनतकशों पर प्रत्याक्रमण करेगा इसकी संभावना पैदा हो गयी थी। इन परिस्थितियों को संज्ञान में लेते हुए कांग्रेस ने तीनों इंटरनेशनलों के बीच संयुक्त मोर्चे का आह्वान कर पूंजीवादी प्रत्याक्रमण से निपटने की राह दिखलाई।

तीनों इंटरनेशनलों (दूसरा इंटरनेशनल, ढाइवां इंटरनेशनल व तीसरा इंटरनेशनल) के बीच संयुक्त मोर्चा कायम करने के प्रयास विशेष सफल नहीं हुए।

इसके पश्चात कम्युनिस्ट इंटरनेशनल 1943 में अपने भंग होने से पूर्व तक विश्व सर्वहारा आंदोलन को नेतृत्व देता रहा। इस दौरान उसने फासीवाद पर मार्क्सवादी अवस्थिति ग्रहण कर मजदूर आंदोलन को फासीवाद विरोधी संयुक्त मोर्चा कायम करने की सही रणनीति पर खड़ा किया। औपनिवेशिक देशों में इसने साम्राज्यवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे के गठन की दिशा दी। इंटरनेशनल ने क्रांति में मेहनतकश महिलाओं की भूमिका को स्वीकारते हुए उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के झण्डे तले लामबन्द करने के लिए नीति निर्धारित की। 1943 में इंटरनेशनल के भंग होते वक्त जारी पत्र में इसके महत्व की चर्चा इन शब्दों में की गयी :

> "कम्युनिस्ट इंटरनेशनल जो कि 1919 में पुरानी युद्ध पूर्व मजदूर पार्टियों के जबरदस्त बहुमत के राजनैतिक पराभव के परिणामस्वरूप गठित हुआ था, की ऐतिहासिक भूमिका इस बात में है कि इसने मार्क्सवाद की शिक्षाओं की मजदूर आंदोलन के अवसरवादी तत्वों द्वारा विकृतिकरण व भ्रष्टीकरण से रक्षा की। बहुत सारे देशों में इसने आगे बढ़े हुए मजदूरों के हिरावल को वास्तविक मजदूर पार्टियों में एकजुट होने में मदद की। उन्हें उत्पीड़ित जनसमुदाय को उनके आर्थिक राजनैतिक हितों की रक्षा में, फासीवाद के खिलाफ व युद्ध के खिलाफ संघर्ष में एकजुट करने, सोवियत संघ को फासीवाद के खिलाफ मुख्य संघर्षकर्ता के रूप में समर्थन करने में एकजुट करने में मदद की। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने हिटलरवादियों की विदेशी राज्यों में छिपी गतिविधियों का बिना थके भण्डाफोड़ किया जो कि अपनी गतिविधियों को अपनी इस चिल्ल पों से ढंकने की कोशिश करते थे कि कम्युनिस्ट इंटरनेशनल इन राज्यों के आंतरिक मामलों में कथित रूप से हस्तक्षेप करता है।"
>
> **(Dissolution of the Communist international, MIA अनुवाद हमारा)**

स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति का महत्व अगर अंतर्राष्ट्रीय स्तर का था तो अक्टूबर क्रांति के अंतर्राष्ट्रीय सबकों को व्यवहार में उतारने का काम तीसरे इंटरनेशनल के बगैर पूरा नहीं हो सकता था।

C. अक्टूबर क्रांति, पिछली सदी और भविष्य की सर्वहारा क्रांतियां

अक्टूबर क्रांति से पूंजीवाद के पतन के युग की शुरुआत होने की बात करते हुए स्तालिन ने कहा था-

> "साम्राज्यवाद के केन्द्रों और इसके पृष्ठभाग दोनों में क्रांति का बीज बोकर, केन्द्रों (मेट्रोपोलिस) में साम्राज्यवाद की शक्ति को कमजोर करके और उपनिवेशों में इसके आधिपत्य को हिला कर अक्टूबर क्रांति ने **समग्र तौर पर** विश्व पूंजीवाद के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है।
>
> "अपने असमान विकास के चलते, टकराहटों और सशस्त्र मुठभेड़ों की अवश्यम्भाविता के चलते, अंततः अभूतपूर्व साम्राज्यवादी नरसंहार के चलते जहां साम्राज्यवाद की अवस्था में पूंजीवाद का स्वतःस्फूर्त विकास पूंजीवाद के पतन और उसके मरणासन्न होने की प्रक्रिया में बदल गया है, वहीं अक्टूबर क्रांति और इसके परिणाम स्वरूप पूंजीवाद की विश्व व्यवस्था से

एक विशाल देश बाहर हो जाने की गति थोड़ा-थोड़ा करके विश्व साम्राज्यवाद की नींव को ही कमजोर करने वाली इस प्रक्रिया को त्वरित करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी।

"इससे भी आगे। साम्राज्यवाद को कमजोर करते हुए अक्टूबर क्रांति ने इसी के साथ ही सर्वहारा अधिनायकत्व की शक्ल में विश्व क्रांतिकारी आंदोलन के लिए एक शक्तिशाली और खुला आधार, एक ऐसा आधार जो पहले कभी नहीं था और इस समय जिस पर समर्थन के लिए निर्भर किया जा सकता है, निर्मित किया। इसने विश्व क्रांतिकारी आंदोलन के लिए एक ऐसा शक्तिशाली और खुला केन्द्र तैयार किया जैसा इसके पहले कभी नहीं था और जिसके इर्द-गिर्द अब **साम्राज्यवाद के विरुद्ध सभी देशों के सर्वहाराओं और उत्पीड़ित लोगों के एकताबद्ध क्रांतिकारी मार्चे को गोलबंद और संगठित किया जा सकता है।**

"प्रथमतः इसका अर्थ है कि अक्टूबर क्रांति ने विश्व पूंजीवाद को ऐसा घातक घाव दिया है जो कभी भी नहीं भर सकता। ठीक इसी कारण से पूंजीवाद कभी भी अक्टूबर क्रांति से पहले वाला "संतुलन" और "स्थायित्व" नहीं पा सकता।

... ...

"... ... ... क्योंकि विश्व पूंजीवाद का संकट विकास की ऐसी मंजिल में पहुंच गया है जहां क्रांति की लपटें कभी साम्राज्यवाद के केन्द्रों में तो कभी उसके हाशिये में अवश्यम्भावी तौर पर उठ पड़ेंगी जो पूंजीवादी पैबंदगिरी को नाकामी में सीमित कर देंगी और पूंजीवाद के पतन को रोजाना और करीब ले आयेंगी। ... ...

... ...

"पूंजीवाद के स्थायित्व का युग **बीत चुका** है और इसके साथ ही पूंजीवादी व्यवस्था के अविनाशी होने की कहावत भी बीती बात हो गयी है।

"पूंजीवाद के पतन का युग **शुरू हो चुका** है।"

(अक्टूबर क्रांति का अंतर्राष्ट्रीय चरित्र - स्टालिन)

इस तरह स्तालिन ने बताया कि अक्टूबर क्रांति की प्रेरणा से साम्राज्यवादी विश्व व्यवस्था के केन्द्रों व पृष्ठभाग दोनों से उस पर हमला बोले जाने की शुरुआत हो गयी। अपने संकट व इन हमलों के चलते विश्व पूंजीवाद के स्थायित्व का युग समाप्त हो गया और उसके पतन के युग की शुरुआत हो गयी।

स्तालिन ने बताया कि अक्टूबर क्रांति से ही विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रांतियों के एक नये मोर्चे का निर्माण संभव हुआ जो पश्चिम के सर्वहारा से लेकर रूसी क्रांति से होते हुए पूर्व के उत्पीड़ित जनगण तक फैला हुआ था।

स्तालिन जब पूंजीवाद के पतन के युग की घोषणा कर रहे थे तो उस समय दुनिया भर में मजदूर मेहनतकशों के संघर्ष आगे बढ़ रहे थे। उनकी मदद के भरोसेमंद केन्द्र के बतौर सोवियत समाजवाद मौजूद था। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की लहर और बाद में समाजवादी खेमे की स्थापना ने दिखाया कि साम्राज्यवद को पीछे ढकेला जा रहा है। उम्मीदें बंधने लगीं कि यही प्रक्रिया आगे बढ़कर पूंजीवाद को धरती से समाप्त कर देगी।

पर सोवियत संघ में 1956 में पूंजीवादी पुनर्स्थापना से शुरू होकर 1976 में चीन में पूंजीवादी पुनर्स्थापना ने स्थिति एकदम बदल दी। समाजवादी क्रांतियों की पहली शृंखला समाप्त हो गयी। राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष थम गये। साम्राज्यवाद को एकबार फिर से हमलावर होने का मौका मिल गया। दुनिया भर के मजदूर आंदोलन व कम्युनिस्ट आंदोलन टूट-फूट बिखराव के शिकार हो गये।

इस तरह घटनाक्रम उस तरह नही घटा जैसा स्तालिन ने सोचा था। समाजवादी खेमे के समाप्त होने से विश्व पूंजीवाद के सामने पहले सरीखा खतरा नहीं रहा। हालांकि ऐतिहासिक नियति के तौर पर यह बात सच है कि भविष्य की समाजवादी क्रांतियों की शृंखला पूंजीवाद को पतन की ओर ले जायेगी कि पूंजीवाद की जगह समाजवाद ले लगा। यह बात भी सच है कि पूंजीवाद के निरंतर गहराते आर्थिक संकट उसे लगातार स्थायित्व से दूर ले जायेंगे। पर यह बात भी सच है कि समाजवादी क्रांतियों की पहली शृंखला की समाप्ति से पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के सामने हाल फिलहाल कुछेक देशों के कम्युनिस्ट आंदोलन को छोड़कर कोई बड़ी चुनौती नहीं रह गई।

पिछली सदी के इतिहास में अक्टूबर क्रांति की छाप एक ऐसे सितारे के रूप में है कि अगर इस सितारे को हटा दें तो इतिहास की कल्पना करनी मुश्किल हो जाती है। कहा जा सकता है कि आज दुनिया जहां है, दुनिया के मेहनतकश अवाम को जो कुछ भी हासिल है उसमें अक्टूबर क्रांति की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अक्टूबर क्रांति 20वीं सदी के ऐतिहासिक पटल पर घटने वाली ऐसी युगान्तरकारी घटना थी जिसकी अनुगूंज क्रांति के बाद दुनिया के सभी कोनों में महसूस की गयी। तीसरे इंटरनेशनल ने अगर दुनिया की जनता के लिए घोषित किया कि "संकेत सुनाई दे रहे हैं" तो यह कहीं से भी गलत न था। रूस में पैदा होने वाले संकेत दुनिया में चारों ओर सुनाई दे रहे थे। ये संकेत उन देशों में जहां समाजवादी आंदोलन मौजूद था के साथ उन देशों में भी सुनाई दिये जहां अक्टूबर क्रांति की अनुगूंज से ही कम्युनिस्ट आंदोलन की शुरूआत हुई। ये संकेत जर्मन, हंगरी, आस्ट्रिया सरीखे यूरोपीय देशों में सबसे अधिक स्पष्ट थे जहां क्रांतियां शुरू हो गयीं। ये संकेत चीन के 4 मई आंदोलन में, अर्जेन्टीना के संघर्षों से लेकर भारत के मुक्ति संग्राम सब में दिखायी दिये। रूसी सोवियतों की तर्ज पर हर जगह सोवियतों का निर्माण किया जाने लगा। क्यूबा के तंबाकू उत्पादक श्रमिकों ने सोवियतें बना लीं। इण्डोनेशिया के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में क्रांति का प्रभाव महसूस किया गया। आस्ट्रेलिया के भेड़पालकों ने कामगारों के राष्ट्र के रूप से सोवियतों का स्वागत किया। ढेरों युद्ध बंदी रूस से जब लौटे तो वे बोल्शेविक बन चुके थे। रूस को घेरने गयी साम्राज्यवादी फौजों के सिपाही विद्रोही बनने लगे। कुल मिलाकर दुनिया के साम्राज्यवादी मुल्कों ने सोवियत संघ को मान्यता भले ही बहुत बाद में दी, दुनिया भर के कामगारों ने

सोवियत रूस को मेहनतकशों के राज के बतौर मान्यता अक्टूबर क्रांति के साथ ही दे दी। सोवियत समाजवाद दुनिया भर के जनसंघर्षों-मजदूरों-मेहनतकशों की आशा व प्रेरणा का स्रोत बन गया।

अक्टूबर समाजवादी क्रांति की अनुगूंज के चलते दुनिया से पूंजीवादी जनवादी क्रांतियों के युग का अंत हो गया। यानी पूंजीपति वर्ग की क्रांतिकारिता खत्म हो गयी। आगे सभी क्रांतियां समाजवादी क्रांति की नवजात श्रंखला का हिस्सा बन गईं जिनका नेतृत्व सर्वहारा वर्ग को करना था।

अक्टूबर क्रांति ने पूंजीवाद के कटे-छंटे सीमित जनवाद की जगह मजदूरों मेहनतकशों के लिए महत्तम जनवाद वाले समाजवादी समाज की स्थापना की। सोवियत संघ में जनवाद की इस स्थिति ने न केवल गुलाम देशों बल्कि साम्राज्यवादी देशों में भी जनवादी अधिकारों के संघर्षों को तेज किया। अक्टूबर क्रांति ने पहले ही दिन मेहनतकशों के लिए सार्विक मताधिकार की घोषणा की जो 20वीं सदी का अन्त आते आते पूरी दुनिया के अधिकांश देशों तक फैल गया।

सोवियत समाजवाद में श्रमिकों की बेहतर स्थिति ने एक दबाव का काम किया जिसके चलते तमाम पूंजीवादी देश अपने अपने देशों में कल्याणकारी राज्य का ढांचा खड़ा कर क्रांति की संभावना टालने को मजबूर हुए। 70 के दशक में समाजवादी खेमे के ध्वस्त होने के साथ पूंजी ने इस कल्याणकारी राज्य पर हमला बोल दिया। फिर भी कहा जा सकता है कि दुनिया भर के मजदूरों-मेहनतकशों को जो कुछ अधिकार आज भी हासिल हैं उसमें पिछली सदी की समाजवादी क्रांतियों की शृंखला का बहुत बड़ा हाथ है और इस शृंखला की अग्रदूत अक्टूबर क्रांति थी।

क्रांतियों का भय जहां एक ओर साम्राज्यवादी शासकों को कल्याणकारी राज्य की ओर ले गया तो दूसरी ओर उन्होंने क्रांतियों की संभावना को कुचलने के लिए क्रूर नग्न तानाशाही वाले फासीवाद को भी पैदा किया जो एक समय में द्वितीय विश्वयुद्ध के वक्त पूरी दुनिया को हिटलर के नेतृत्व में अपने आगोश में लेने को तैयार था। फासीवाद के इस शत्रु को धूल चटाने का काम सोवियत जनता ने भारी कुर्बानी देकर किया।

अक्टूबर क्रांति के साथ शुरू हुई समाजवादी क्रांतियों की शृंखला के सहयोग समर्थन पर राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों की आंधी को पिछली सदी ने देखा। इन संघर्षों ने साम्राज्यवाद को पीछे धकेलते हुए उपनिवेशों अर्द्धउपनिवेशों-नवउपनिवेशों के युग से आर्थिक नवउपनिवेशवाद के युग में पहुंचा दिया। आज किसी भी मुल्क को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर पूर्ण गुलाम बनाना साम्राज्यवादियों के लिए असम्भव हो चुका है हालांकि उनकी चाहत लगातार इसी की बनी हुई है। अमेरिकी साम्राज्यवाद का ईराक-अफगानिस्तान में हश्र इस बात की पुष्टि करता है। जनवाद व आजादी की यह चेतना दुनिया भर की चेतना में घुल चुकी है यह पिछली सदी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसे साम्राज्यवादी जबरन छीन नहीं सकते।

पिछली सदी में समाजवादी क्रांतियों की शृंखला की शुरूआत अक्टूबर क्रांति से हुई थी। इस क्रांति ने मानवता के इतिहास में नये युग का सूत्रपात किया था। इसी शृंखला में चीन में क्रांति होने व पूर्वी यूरोप के देशों में क्रांति होने से एक पूरा समाजवादी खेमा अस्तित्व में आ गया। इसी दौरान इस खेमे के समर्थन और सहयोग से राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों का ज्वार तेजी से आगे बढ़ रहा था। साम्राज्यवाद को लगातार पीछे धकेला जा रहा था।

पर समाजवादी देशों में पूंजीवादी पुनर्स्थापना ने सारा माहौल ही बदल दिया। इसकी शुरुआत सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना से हुई। इसके साथ ही पूर्वी यूरोप के देशों में भी पूंजीवादी पुनर्स्थापना हो गयी। सोवियत संघ के इस पराभव का वैज्ञानिक मूल्यांकन कर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी व उसके नेता माओ ने सोवियत समाजवाद के निर्माण में की गयी गलतियों को चिह्नित किया व भविष्य में पुनर्स्थापना रोकने के लिए सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति का रास्ता दिखाया। आज यह सब माओ विचारधारा के हिस्से के बतौर मार्क्सवादी सिद्धान्त का हिस्सा बन चुका है। कालान्तर में चीन में पूंजीवादी पुनर्स्थापना के साथ ही अक्टूबर क्रांति से शुरू हुई समाजवादी क्रांतियों की पहली शृंखला का अन्त हो गया। अब 21वीं सदी में समाजवादी क्रांतियों की नयी शृंखला शुरू होगी। पिछली सदी की समाजवादी क्रांतियों की शृंखला के अनुभव 21वीं सदी की नयी सर्वहारा क्रांतियों की थाती बनेंगे।

अक्टूबर क्रांति से शुरू हुई पिछली सदी की क्रांतियों की प्रक्रिया में मार्क्सवाद विकसित होकर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा के स्तर तक उन्नत हो गया। भविष्य की क्रांतियां आज के इसी मार्क्सवाद पर आधारित होकर होंगी।

पिछली सदी की समाजवादी क्रांतियों की सभी क्रांतियों की शुरुआत जनवादी क्रांति से हुई थी। इनकी शुरुआत निजी सम्पत्ति के पूंजीवादी रूप पर हमले से न होकर निजी सम्पत्ति के सामंती रूप पर हमले से हुई थी। इसने इन सभी क्रांतियों को शुरू करने में आबादी के लिहाज से व्यापकता प्रदान की लेकिन बाद में इसी ने ढेर सारी बाधाएं भी पैदा कीं। खुद रूसी क्रांति की शुरुआत फरवरी 1917 की जनवादी क्रांति से हुई। अक्टूबर 1917 की समाजवादी क्रांति फरवरी क्रांति की निरंतरता में ही थी। इसी तरह चीन, वियतनाम, कोरिया व पूर्वी यूरोप के देशों में भी क्रांति का नेतृत्व सर्वहारा वर्ग ने किया और इनमें पहले जनता के जनवाद कायम हुए, फिर समाजवाद की ओर बढ़ा गया।

समाजवादी क्रांति की शुरुआत अपनी जमीन अर्थात सम्पत्ति पर हमले से न होकर जनवादी क्रांतियों की निरंतरता से होने से इन समाजवादी समाजों की ऐसी सीमाएं बनी जिन्होंने ढेरों विकृतियों को जन्म दिया। ये सीमाएं कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की किन्हीं कमियों/गलतियों की वजह से नहीं बल्कि इन समाजों के समाज विकास की अपेक्षाकृत पिछड़ी अवस्था में होने के चलते पैदा हुईं थीं। इनसे बच पाना सम्भव नहीं था।

पिछली सदी के विकासक्रम के बाद दुनिया वहां पहुंच गयी है जहां पूंजीवाद, साम्राज्यवाद के तहत एक एकीकृत विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के तहत काम कर रहा है। अर्थात दुनिया के अधिकांश देशों में न केवल पूंजीवादी उत्पादन संबंध कायम हो चुके है बल्कि वे साम्राज्यवाद की गुलामी के औपनिवेशिक-अर्धऔपनिवेशिक नव औपनिवेशिक रूप से मुक्ति पा चुके हैं। आज दुनिया के पिछड़े मुल्क साम्राज्यवाद के साथ आर्थिक नव औपनिवेशिक सम्बन्धों मे बंधे हैं।

इसीलिए विकसित देशों में ही नहीं अधिकतर पिछड़े देशों में भी अब समाजवादी क्रांति एजेण्डे पर आ गयी है। जनवादी क्रांतियों का जमाना बीत चुका है। अब इक्कीसवीं सदी में शुरू होने वाली समाजवादी क्रांतियों की श्रृंखला की क्रांतियों की शुरुआत अपनी जमीन से होगी यानी निजी सम्पत्ति की व्यवस्था के खिलाफ सामूहिक सम्पत्ति की स्थापना के लिए। ये क्रांतियां सीधे पूंजीवाद के खिलाफ शुरू होंगी। ये क्रांतियां ज्यादा व्यापक, ज्यादा सघन और ज्यादा वैश्विक होंगी। इनसे बनने वाले समाजवादी समाज ज्यादा स्वस्थ व टिकाऊ होंगे। हालांकि पूंजीवादी पुनर्स्थापना का खतरा इनमें भी बना रहेगा और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांतियों की श्रृंखला के जरिये ही इन्हें कम्युनिज्म की ओर बढ़ाया जा सकेगा तब भी ये पिछली सदी के समाजवादी समाजों की तुलना में ज्यादा टिकाऊ होंगे। ये क्रांतियां और उनसे निर्मित समाज ही बीसवीं सदी के कायम हुए समाजवादी समाजों की कमियों को ज्यादा बेहतर ढंग से चिह्नित कर पायेंगे।

राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष अक्टूबर क्रांति के बाद सर्वहारा समाजवादी क्रांति के अभिन्न अंग बन गये थे। अब हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष अब सर्वहारा समाजवादी क्रांति में विलीन हो गये हैं यानी अब राष्ट्रीय मुक्ति के बचे खुचे कार्यभारों को पूरा करने के लिए अलग से जनवादी क्रांति की आवश्यकता नहीं है बल्कि समाजवादी क्रांति ही राष्ट्रीय मुक्ति के बचे कार्यभारों को पूरा करेगी।

चूंकि दुनिया अभी भी साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति के युग में है अतः इस युग के मार्क्सवाद के तौर पर लेनिनवाद की शिक्षाओं की भूमिका भविष्य की क्रांतियों में भी बनी रहेगी। इन अर्थों में अक्टूबर क्रांति का विश्व व्यापी महत्व इसकी शिक्षाओं के बतौर आज भी कायम है। अक्टूबर क्रांति सभी देशों के मजदूरों के लिए प्रेरणा का काम करती रहेगी।

■■■